M.Ed

Sem – II
Paper – III
Unit – IV

Curriculum Studies

प्र०। प्रतिमान का क्या अर्थ है? पाठ्यक्रम विकास तथा योजना के प्रमुख प्रतिमानों का वर्णन करें?

उत्तर परिचय:-

प्रत्येक विद्यालय में शिक्षा के निर्धारित लक्ष्यों के निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति के लिये कुछ विशेष साधनों का उपयोग किया जाता है। पाठ्यक्रम भी एक ऐसा ही साधन है। जिसकी सहायता से प्रत्येक विद्यार्थी को उसके समय के सदुपयोग स्वयं ज्ञानार्जन की दिशा में सजग रखा जा सकता है। इसके साथ ही साथ शिक्षकों की भी उनके कर्तव्यों की पूर्ति हेतु सही दिशा मिलती रहती है। इसी प्रकार पाठ्यक्रम के कुछ प्रतिमान होते हैं जो शिक्षण कार्य को सरल बनाते हैं।

प्रतिमान का अर्थ:- Model

प्रतिमान शब्द अंग्रेजी भाषा के Model शब्द का हिन्दी रूपान्तर है। यह किसी वस्तु के ढांचे एवं प्रणाली को दोबारा पैदा करने के लिए जाना जाता है। शिक्षा के क्षेत्र में यह प्रयोग विषय के लिए

जाना जाता है। शिक्षा के क्षेत्र में यह प्रयत्न विषय के लि
शैक्षिक बातों में मदद करता है। उदाहरण के लिए
किसी कक्षा में विद्यार्थियों के लिए एक अध्यापक उ
'प्रतिमान' होता है। यह 'प्रतिमान' एक आधार की त
है जो इच्छित उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए सही मा
दर्शन करता है।

प्रतिमान एक आदर्श की तरह होता
जो शिक्षण विधि एवं छात्रों के लिए सहायक सिद्ध
होता है। इनके द्वारा एक शिक्षक छात्रों की अनेक
समस्याओं का समाधान आसानी से कर सकता है। प्रतिमा
किसी वस्तु के वे नमूने हैं जिन्हें देखकर उसी प्र
की वस्तु बनाई जा सके। जैसे शिक्षक बच्चों के लि
एक प्रतिमान का कार्य करता है वे अपने शिक्षक
को देखकर वैसा ही बनने की इच्छा रखते हैं। इसलि
शिक्षण-प्रतिमान एक प्रकार की योजना का ढांचा होता है।

पाठ्यक्रम विकास तथा योजना के प्रमुख प्रतिमान:-

प्रशासनिक प्रतिमान :- Administrative Model

पाठ्यक्रम विकास का प्रशासनिक प्रतिमा
का संबंध तकनीकी से है प्रशासनिक प्रतिमान की रूपरेखा

शिक्षण डिजायन में विकसित की जाती है। प्रशासनिक प्रतिमान में पाँच क्रियाएं आती हैं—

1. नियोजन
2. संगठन
3. प्रशासन या कार्यान्वयन
4. निर्देशन
5. प्रतिपुष्टि का नियंत्रण।

आई. के. डेविस द्वारा प्रशासनिक प्रतिमान की प्रक्रिया में तीन सोपानों का वर्णन किया गया है—

शिक्षण का नियोजन

शिक्षण का संगठन — शिक्षण का नेतृत्व

भारत के NCTE, NCERT तथा U.G.C. द्वारा अनेक शैक्षिक संगठन पाठ्यक्रम निर्माण में प्रशासनिक प्रतिमान को अपनाया जाता है।

- ग्रास रूट प्रतिमान Grass root Model :—

ग्रास रूट प्रतिमान प्रशासनिक प्रतिमान से विघटित है उदाहरण के लिए ग्रास रूट प्रतिमान

का आरम्भ व्यक्तिगत प्रतिमान में अध्यापक द्वारा किया जाता है। ग्रास रूट प्रतिमान इस बात पर जोर देता है कि पाठ्यक्रम प्रभावशाली तब हो सकता है जब पाठ्यक्रम के निर्माण तथा विकास में अध्यापकों की भागीदारी हो ग्रास रूट प्रतिमान चार सिद्धान्तों पर आधारित है—

1. जैसे ही अध्यापकों के सामर्थ्य में सुधार होगा, पाठ्यक्रम में भी सुधार होगा।

2. अध्यापकों के सामर्थ्य में सुधार होगा यदि अध्यापक पाठ्यक्रम पुनरावृत्ति की समस्याओं में व्यक्तिगत रूप से भाग लेगा।

3. यदि अध्यापकों की पाठ्यक्रम की समस्याओं को हल करने में भागीदारी होगी तो यह भागीदारी विश्वसनीय होगी।

4. जब लोग एक दूसरे से आमने-सामने मिलते हैं तो वे एक दूसरे को अच्छी तरह से समझने में समर्थ हो जाते हैं और आधारभूत सिद्धान्तों, लक्ष्यों तथा योजनाओं तक पहुँच बनाई जा सकती है।

ये सिद्धान्त सक्रीय बन जाते हैं जब अध्यापकों को नए पाठ्यक्रम की योजना में कार्य करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है कक्ष जिलों में पाठ्यक्रम की पुनर्निरीक्षण तथा अभिलेख करने के लिए कार्यशालाएं भी आयोजित की जाती है इन कार्यशालाओं में प्रशासक अध्यापक, विद्यार्थी तथा उनके माता-पिता तथा समुदाय के अन्य सदस्य भी शामिल होते हैं। इन कार्यशालाओं में भागीदार लोग पाठ्यक्रम की स्थानीय स्थिति में समस्याओं पर विचार करते हैं तथा उनके समाधान पर विचार करते हैं।

प्रदर्शन प्रतिमान Demonstration Model

प्रदर्शन प्रतिमान का प्रयोग छोटे पैमाने पर पाठ्यक्रम नवाचार के लिए किया जाता है। स्मिथ, स्टेलने तथा शोर के अनुसार प्रदर्शन प्रतिमान के दो रूप हो सकते हैं- प्रथम रूप में प्रयोगात्मक पाठ्यक्रम योजना के लिए विद्यालय में अध्यापक की एक अलग यूनिट संगठित की जाती है। इस यूनिट का उद्देश्य पाठ्यक्रम का नया खण्ड तैयार करना होता है।

प्रदर्शन प्रारूप वास्तव में पाठ्यक्रम विकास का कोई अलग से प्रारूप नहीं है। यह पाठ्यक्रम के प्रशासनीय प्रतिमान व ग्रास रूट मॉडल का विस्तृत रूप है। जिसमें इन दोनों प्रतिमानों के अनुसार निर्मित पाठ्यक्रम को क्रियान्वित करने से पहले उसका प्रदर्शन किया जाता है।

प्रशासनीय प्रतिमान व ग्रास रूट प्रतिमान के अधीन पाठ्यक्रम को लागू करने के पश्चात उसका विरोध किया गया, क्योंकि उपरोक्त दोनों तरह के प्रतिमानों में पाठ्यक्रम निर्माण पाठ्यक्रम का विकास व पाठ्यक्रम को लागू करने का कार्य अलग-अलग व्यक्तियों द्वारा किया जाता है। विद्यालयों में यदि ग्रास रूट मॉडल लागू किया जाए तो उसका विरोध प्रशासनीय स्तर पर किया जाता है।

इस प्रकार इन दोनों प्रारूपों की कमियों को दूर करने के लिए समय, धन की श्रम की wastage को सम्पूर्ण करने हेतु पाठ्यक्रम को Demonstrate करने की आवश्यकता महसूस की गई।

प्ररूप निर्माण इस प्रकार है

1 Curriculum Planning — पाठ्यक्रम योजना
2 Curriculum Development — पाठ्यक्रम विकास
3 Curriculum Demonstration — पाठ्यक्रम प्रदर्शन
4 Curriculum Implementation — पाठ्यक्रम को लागू करना।

पाठ्यक्रम विकास के प्रदर्शन प्ररूप का ढांचा इस प्रकार होगा।

1 National level
↓
State level
↓
District Level / local Level
↓
Implement
↓
Satisfaction
↓
Demonstration
↓
Review Committee

Working Committee
↓
Any Board's University Proposal of Teacher
↓
Teacher

पाठ्यक्रम विकास के प्रदर्शन प्रारूप के गुण—

1. यह प्रतिमान के विकास व उसके लागू करने के बीच आने वाले समय अन्तर को कम करता है।
2. यह मॉडल प्रभावशाली है।
3. इस प्रतिमान से समय, धन, श्रम की बचत होती है।
4. प्रदर्शन प्रारूप से प्राप्त परिणाम अधिक स्थाई होते हैं।
5. पाठ्यक्रम की पूर्व परीक्षण इसी प्रतिमान के तहत सम्भव है।
6. यह प्रारूप अत्यन्त उपयोगी व महत्वपूर्ण है।

System Analysis Model व्यवस्था विश्लेषण प्रतिमान

व्यवस्था विश्लेषण प्रतिमान:— व्यवस्था विश्लेषण प्रतिमान का आरम्भ द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान हुआ। इस प्रतिमान में संगठनात्मक प्रकार्य में वैज्ञानिक गणितीय तकनीक का प्रयोग किया जाता है। व्यवस्था विश्लेषण के बिना किसी भी व्यापक व्यवस्था का विकास नहीं

किया जा सकता। व्यवस्था विश्लेषण प्रतिमान से प्रबंधकों को प्रबंध की समस्याओं के विश्लेषण में वैज्ञानिक तथा मात्रात्मक विधियों का प्रयोग करता है।

व्यवस्था विश्लेषण के सोपान

1. लक्ष्यों का निर्माण — Formulation of objective
2. व्यवस्था कार्य का पुनरावलोकन — Review of system operation
3. आंकड़ों का संग्रह — Collection of Data
4. आंकड़ों का विश्लेषण — Analysis of Data
5. समस्या का पृथक्करण — Isolation of Problem
6. समस्या के प्रक्रियाओं का विशिष्टीकरण — Specification of the operation in the Problem
7. उपव्यवस्थाओं का कार्यों के लिए ब्लाक चित्र

व्यवस्था विश्लेषण के बाद जांचकर्ता समस्या के अस्थाई हल का प्रयास किया जाता है। इस पर अमल करने के बाद उसकी कार्यात्मकता को देखने का प्रयास किया जाता है। इसके असफल होने पर दोबारा उपरोक्त सोपानों से नया समाधान निकाला जाता है। यह प्रक्रिया तब तक दोहराई जाती है। जब तक जांचकर्ता किसी समाधान तक नहीं पहुंच जाता जिससे

समस्या का समाधान हो जाए।

व्यवस्था विश्लेषण की कसौटियाँ –

1. कार्योत्पादन Performance
2. लागत Cost
3. उपव्यवस्थाओं का विश्लेषण
4. उपयोगिता Utility
5. समय Time
6. शैक्षिक व्यवस्था विश्लेषण द्वारा उपयोगी परिवर्तन

व्यवस्था विश्लेषण का शैक्षिक क्षेत्र –

1. वैज्ञानिक तथा मात्रात्मक उपागम से जटिल प्रशासनिक समस्याओं का समाधान।
2. वास्तविक समस्याओं का समाधान
3. प्रशिक्षण।

Sem - II
Unit - II
Paper - III

Q. पाठ्यक्रम विकास का क्या अर्थ है? इसकी परिभाषा बताते हुए इसके सिद्धान्तों का वर्णन करें।

अथवा

पाठ्यक्रम विकास के कौन-कौन से सिद्धान्त हैं? विस्तार से समझाईये।

अथवा

पाठ्यक्रम विकास का अर्थ बताते हुए इसके क्षेत्रों का वर्णन करे।

उ. परिचय :-

परिवर्तन प्रकृति का अवश्यम्भावी नियम है और इसे कोई भी नहीं बदल सकता है प्रकृति के इसी नियम के अनुसार समाज, शिक्षा स्वयं शिक्षा का पाठ्यक्रम भी बदलता रहता है पाठ्यक्रम में समय-समय पर सुधार व परिवर्तन किया जाना आवश्यक है।

पाठ्यक्रम शब्द अपने आप में अकेला सार्थक नहीं होता है पाठ्यक्रम के साथ में विकास शब्द सदैव ही जुड़ा होता है तथा इसी से इसकी सार्थकता बनी रहती है। पाठ्यक्रम विकास एक ऐसा प्रत्यय या एक ऐसी प्रक्रिया के रूप में समझा जा सकता है जिसकी आवश्यकता को सदैव ही अनुभव किया जाता है यह परिवर्तन समाज तथा राष्ट्र की आवश्यकताओं के अनुसार किया जाता है।

शिक्षा की उपयोगिता व सार्थकता तभी मानी जा सकती है जब वह अपने समाज के द्वारा निर्धारित उद्देश्यों को पूर्ण कर रही है, अन्यथा शिक्षा पूर्णतया निरर्थक होती है। प्राचीन काल से लेकर वर्तमान समय तक शिक्षा ने पाठ्यक्रम के द्वारा शैक्षिक उद्देश्यों को पूर्ण किया है। जब-जब शिक्षा के उद्देश्य बदले हैं तब-तब पाठ्यक्रम को भी विकसित एवं परिमार्जित किया गया है।

पाठ्यक्रम विकास का अर्थ एवं परिभाषा:→

पाठ्यक्रम विभिन्न पाठ्य विषयों एवं पाठ्य सहगामी क्रियाओं व विद्यालय में किये जाने वाले समस्त क्रियाकलापों का योग है। परन्तु पाठ्यक्रम का निर्धारण तत्कालीन समाज की आवश्यकताओं तथा विचार धारा के अनुसार किया जाता है यद्यपि सामाजिक परिस्थितियाँ सदैव परिवर्तनशील होती हैं, इसलिए पाठ्यक्रम को भी समयानुसार नवीनीकरण की आवश्यकता होती है, इस नवीनीकरण के साथ ही शिक्षा समाज के द्वारा नवनिर्मित उद्देश्यों को पूर्ण करने में सक्षम होती है। यह एक निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है तथा इस प्रक्रिया के अन्तर्गत / के द्वारा समाज के लिए अनुपयोगी विषयों व क्रियाकलापों को पाठ्यक्रम में से निकालकर इसमें समाज

उपयोगी विषयों तथा दृष्टिकोणों को सम्मिलित किया जाता है।

परिभाषा :-

हिल्डा टाबा के अनुसार :-
"पाठ्यक्रम परिवर्तन का अर्थ एक प्रकार से एक संस्था को परिवर्तन करना है।"

सेलर एवम् अलेक्जेन्डर के अनुसार :-
"विद्यालय पाठ्यक्रम में होने वाले परिवर्तनों में समुदाय, छात्र-जनसंख्या, क्षेत्र, व्यावसायिक स्टाफ तथा समाज में हुए परिवर्तन परिलक्षित होने चाहिए तथा इन सभी परिवर्तनों के द्वारा पाठ्यक्रम परिवर्तन प्रेरित होना चाहिए।"

पाठ्यक्रम विकास / निर्माण के सिद्धान्त :-
पाठ्यक्रम को निर्माण करते समय निम्न लिखित सिद्धान्तों का ध्यान रखना चाहिए :-

विद्यार्थी केन्द्रीयता का सिद्धान्त :-
पाठ्यक्रम छात्रों की रुचियों, आवश्यकताओं योग्यताओं, क्षमताओं, स्थितियों तथा उसके विकास स्तर के अनुकूल

होना चाहिए। इससे छात्रों को उचित विकास के लिये समृद्ध अनुभव प्राप्त होने चाहिए। दूसरे अर्थों बच्चे को पाठ्यक्रम का केन्द्रीय तत्व बनाना चाहिए।

2. समुदाय केन्द्रीयता का सिद्धान्त :-
पाठ्यक्रम का विकास करते समय छात्रों की आवश्यकताओं के साथ-2 समुदाय की आवश्यकताओं को भी ध्यान में रखना चाहिए। वास्तव में सामुदायिक जीवन से ही पाठ्यक्रम की रचना की जानी चाहिए।

3. क्रिया - केन्द्रीयता का सिद्धान्त :-
पाठ्यक्रम उन क्रियाओं पर केन्द्रित होना चाहिए जिनमें छात्र रूचि लेते हैं।

4. विविधता का सिद्धान्त :-
पाठ्यक्रम का आधार व्यापक होना चाहिए क्योंकि संकीर्ण पाठ्यक्रम से व्यक्ति की विभिन्न योग्यताओं को विकसित नहीं किया जा सकता।

5. लचीलेपन का सिद्धान्त :-
पाठ्यक्रम लचीला होना चाहिए और प्रत्येक स्तर के बालकों की आवश्यकता पर आधारित होना चाहिए।

6 एकीकरण / सह सम्बन्ध का सिद्धान्त :-
पाठ्यक्रम को एक सम्पूर्ण इकाई के रूप में ज्ञान प्रदान करना चाहिए। अध्यापकों तथा छात्रों की क्रियाओं में एकीकरण होना चाहिए। विषय वस्तु के पारम्परिक विभाजन को प्रोत्साहन ~~को प्रोत्साह~~ नहीं मिलना चाहिए।

7 अनुभव की समग्रता का सिद्धान्त :-
पाठ्यक्रम अनुभव की समग्रता पर आधारित होना चाहिए। पाठ्यक्रम के अन्तर्गत स्कूल में पढ़ाये जाने वाले प्रकरण ही सम्मिलित नहीं बल्कि इसमें वे सम्पूर्ण अनुभव सम्मिलित हैं जिन्हें छात्र स्कूल में, कक्षा में, पुस्तकालय में, प्रयोगशाला में होने वाली बहुमुखी क्रियाओं तथा अध्यापकों के कई अनौपचारिक सम्बन्धों से प्राप्त करता है।

8 खाली समय के सदुपयोग का सिद्धान्त :-
पाठ्यक्रम में छात्रों के अतिरिक्त और खाली समय के सदुपयोग में सहायक क्रियाओं एवं क्रियाओं एवं अधिगमों का समावेश होना चाहिए। इनमें उनके स्वस्थ मनोरंजन के साथ-2 जीवनोपयोगी क्रियायें करने के लिए भी उपयुक्त प्रशिक्षण भी प्राप्त हो सकता है।

9. श्रम के प्रति आदर का सिद्धान्त :-
प्रायः यह देखने में आया है कि पढ़-लिख कर बालकों में हाथों से काम करने के प्रति अरुचि एवं घृणा के भाव पैदा हो जाते हैं। वे हाथ से कार्य करने वालों को हीन दृष्टि से देखते हैं और स्वयं भी हाथ से कार्य करने से जी चुराते हैं।

10 सयुक्त कार्य का सिद्धान्त :-
पाठ्यक्रम विकास का सयुक्त कार्य होना चाहिए। वे पाठ्यक्रम रचना एवं विकास कमेटी के सदस्य होने चाहिए।

11. रचनात्मक प्रशिक्षण का सिद्धान्त :-
पाठ्यक्रम का विकास करते समय इस बात का ध्यान रखा जाना चाहिए कि इससे छात्रों की रचनात्मक योग्यता को प्रोत्साहन मिले।

12. लोकतांत्रिक मूल्यों के विकास का सिद्धान्त :-
पाठ्यक्रम का इस प्रकार से विकास करना चाहिए कि वह लोकतांत्रिक मूल्यों का विकास करें

लोकतांत्रिक देशों में प्राइमरी, सेकण्डरी तथा उच्च शिक्षा के लिए पाठ्यक्रम निर्धारित करने के लिए यह महत्वपूर्ण सिद्धान्त है।

12 समन्वय का सिद्धान्त :-
पाठ्यक्रम में अनौपचारिक एवं औपचारिक शिक्षा प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष शिक्षा, सामान्य एवं विशिष्ट शिक्षा, उदार एवं व्यावसायिक शिक्षा तथा शिक्षा के व्यक्तिगत एवं सामाजिक उद्देश्यों का समन्वय होना चाहिए।

13 निरन्तरता का सिद्धान्त :-
किसी भी कक्षा के पाठ्यक्रम का विकास करते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि वह एक तरफ से तो पहले पढ़ी हुई बातों से सम्बन्धित रहे तथा दूसरी तरफ आगे की कक्षाओं में जो कुछ पढ़ना है उसके लिए आधार का कार्य करे।

14 मानवीय मूल्यों के विकास का सिद्धान्त :-
वर्तमान मूल्यों में नैतिकता की समाप्ति में गिरावट आ गई है। सफलता नैतिकता से दूर दौड़ती प्रतीत हो रही है। इस दृष्टि से स्कूल के पाठ्यक्रम में मानवीय मूल्यों के विकास के लिए आवश्यक सामग्री, क्रियाओं

एवं अनुभवों को अनिवार्य तौर पर शामिल किया जाना चाहिए।

15 बुनियादी ज्ञान एवं कौशलों का सिद्धान्त :-

स्कूली शिक्षा एक तरफ तो छात्र में शिक्षा की शुरुआत करती है और दूसरी तरफ कुछ छात्रों के लिए यह प्रारम्भिक होने के साथ साथ अंतिम भी होती है। इसलिए आवश्यक है कि इस शिक्षा द्वारा छात्रों को अपने विकास के लिए एवं भविष्य में समायोजन करने के लिए अनिवार्य आधार प्रदान कर दिया जाये।

16 तात्कालिक घटनाओं के अध्ययन का सिद्धान्त :-

आज के जीवन में व्यक्ति के विकास के लिए तात्कालिक घटनाओं के अध्ययन को नजर अन्दाज नहीं करना चाहिए। छात्रों को इस प्रकार प्रशिक्षित करना चाहिए कि वे तात्कालिक घटनाओं के बारे में जानने के लिए अपनी सूझ-बूझ से काम ले ताकि वे सत्य तथा अफवाह में अन्तर करना सीख जाएं। पाठ्यक्रम में जब तात्कालिक घटनाओं को शामिल किया जाता है तो यह ध्यान रखना चाहिए कि वे वास्तविक जीवन की परिस्थितियों से सम्बन्धित हो।

(Scope of Curriculum)

पाठ्यक्रम का क्षेत्र :- यदि हम पाठ्यक्रम के इतिहास पर एक दृष्टि डालें, तो स्पष्ट रूप से ज्ञात होता है कि प्रत्येक प्रकार का पाठ्यक्रम अपने समाज द्वारा निर्धारित शैक्षिक उद्देश्यों पर आधारित होता है। इसीलिये देश और काल की भिन्नता के अनुसार, यहाँ के पाठ्यक्रमों में भी विभिन्नता पाई जाती है। उदाहरणस्वरूप, वैदिक कालीन शिक्षा व्यवस्था में शिक्षा के उद्देश्य बालकों का नैतिक विकास करना, पवित्रता व धार्मिकता का विकास, व्यक्तित्व का विकास करना, सामाजिक कुशलता में वृद्धि करना, संस्कृति का संरक्षण व विकास करना तथा चित्त-वृत्तियों का निरोध करना आदि था। इस उद्देश्य के अनुसार ही तत्कालीन पाठ्यक्रम में वैदिक मंत्रों का उच्चारण व स्मरण, भाषा साहित्य व व्याकरण, परा विद्या (अध्यात्मिक) एवं अपरा विद्या (लौकिक) को प्रमुख स्थान दिया गया था। बालकों को व्यवसायिक शिक्षा के साथ-साथ सैनिक शिक्षा भी दी जाती थी।

बौद्ध कालीन शिक्षा के उद्देश्यों में चरित्र निर्माण, व्यक्तित्व का विकास, बौद्ध धर्म का प्रचार तथा जीवन के लिए तैयार करना आदि प्रमुख थे और इन्हीं के अनुसार बालकों को बौद्ध-धर्मशास्त्रों का अध्ययन, धर्म

दर्शन, आयुर्वेद, कलाएं, शिल्पकलाएं तथा सैनिक शिक्षा का अध्ययन कराया जाता था।

बौद्ध काल के पश्चात भारत पर लगभग तीन सौ वर्षों तक मुस्लिमकालीन शासन व्यवस्था बनी रही। तदनुसार ही पाठ्यक्रम में कुरान की आयतें, अरबी व फारसी भाषाओं, व्याकरण व पत्रलेखन को प्रमुख स्थान प्राप्त हुआ।

इसके पश्चात ब्रिटिश काल, एवं स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात गठित अनेकों आयोगों के दौरान भी शिक्षा के उद्देश्य निर्धारित किये जाते रहे व उन उद्देश्यों की पूर्ति के लिए विभिन्न प्रकार का पाठ्यक्रम संगठित किया जाता रहा। फिर भी कुछ शिक्षा शास्त्रियों ने पाठ्यक्रम के क्षेत्र को निम्न बिन्दुओं से दर्शाया है —

1 बालकों के लक्ष्यों व उद्देश्यों —

जिस प्रकार शिक्षा के उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए पाठ्यक्रम का निर्माण किया जाता है उसी प्रकार पाठ्यक्रम बालकों के लिए कुछ निश्चित उद्देश्यों का निर्धारण भी करता है तथा उन उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए बालकों को प्रेरित करता है।

2. नवीन प्रवृत्तियों का साहचर्य :-
पाठ्यक्रम एक व्यापक अवधारणा का रूप लेता जा रहा है, अतः वर्तमान समय में प्रचलन में आने वाली अनेकों नवीन प्रवृत्तियों का साहचर्य भी इसके क्षेत्र में आता है।

3. बालकों के संज्ञानात्मक विकास का पोषण :-
पाठ्यक्रम का उद्देश्य बालकों का सर्वांगीण विकास एवं ज्ञानवर्द्धन करना भी होता है और वह बालकों को विभिन्न प्रकार का ज्ञान प्रदान करके उनका संज्ञानात्मक विकास करता है।

4. बालकों के सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक स्वास्थ्य का संवर्धन :-
मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है तथा समाज में रहते हुए उसे कुछ अधिकारों का उपयोग एवं कर्तव्यों का निर्वहन करना होता है। पाठ्यक्रम के द्वारा बालकों का सामाजिक विकास एवं मनोवैज्ञानिक स्वास्थ्य का संवर्धन किया जाता है।

अधिगम हेतु व्यवस्था :-
अधिगम / सीखना एक जीवन पर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया है। जिस प्रकार ठहरे हुए पानी में अनेकों गंदगियां

एवम् बीमारियाँ पनपने लगती हैं, उसी प्रकार जब व्यक्ति अधिगम कार्य बन्द कर देता है तो उसमें भी रूढ़िवादिता आ जाती है। इस प्रकार पाठ्यक्रम समय-समय पर बालकों को नवीन एवम् विभिन्न प्रकार के अधिगम हेतु सुविधा प्रदान करता है।

6. शैक्षणिक स्रोतों का उपयोग :-
पाठ्यक्रम बालकों के अधिगम के लिए व्यवस्था ही नहीं प्रदान करता, अपितु बालकों को विभिन्न प्रकार का ज्ञान प्रदान करने हेतु अनेकों शैक्षणिक स्रोतों का भी उपयोग करता है।

7. छात्रों का व्यक्तिगत बोध एवम् उसके अनुरूप शिक्षण व्यवस्था :-
पाठ्यक्रम द्वारा बालकों का वैयक्तिक विकास एवं ज्ञानवर्द्धन किया जाता है। प्रत्येक बालक की अपनी रुचियाँ व क्षमताएँ भिन्न-भिन्न होती हैं व पाठ्यक्रम प्रत्येक बालक के व्यक्तिगत बोध के अनुरूप ही शिक्षण व्यवस्था प्रदान करता है।

8. समस्त कार्यक्रमों एवम् बालकों के कार्यों का मूल्यांकन :-
जैसा कि पूर्व विदित है पाठ्यक्रम विषय-वस्तुओं का समावेश मात्र न होकर

विभिन्न क्रियाओं एवम् कार्यकलापों का भी समन्वय है। पाठ्यक्रम बालकों को ज्ञान प्रदान करने के साथ-ही साथ उनके कार्यों एवं अन्य सभी कार्यक्रमों का मूल्यांकन भी करता है।

Taba's Model of curriculum development

हिल्दा टाबा प्रतिमान कि पाठ्यक्रम विकास का वर्णन करे

हिल्दा टाबा का प्रतिमान :-

हिल्दा टाबा एक प्रमुख पाठ्यक्रम सिद्धान्त शास्त्री लेखिका तथा अध्यापिका थी। इनका जन्म एक शिक्षक परिवार में हुआ था। वे जॉन डेवी की छात्रा थी।

टाबा का कहना था कि पाठ्यक्रम का रूप तथा विकास उन लोगों द्वारा होना चाहिए जो इसका प्रयोग करते हैं अर्थात् पाठ्यक्रम का निर्माण का निर्माण शिक्षकों द्वारा किया जाना चाहिए, ना कि उच्च अधिकारियों द्वारा उनका प्रतिमान चरणबद्ध तरीके के आधार पर बना है जिसमें विशेष कदम तथा उद्देश्य होते हैं तथा

उनसे मिलती जुलती गतिविधियां होती हैं। जिनका मूल्यांकन किया जाता है तथा लक्ष्यों के आधार पर जिनका निर्धारण हुआ है। तथा वे छात्रों को क्या पढ़ाया जाए क्या विकास किया तथा कदम को किस प्रकार प्राप्त किया जाए का अध्ययन किया। एवं शिक्षक को शिक्षण अधिगम वातावरण विचार करना चाहिए। शिक्षक को अपने छात्रों के लिए पाठ्यक्रम तथा अध्ययन तत्व का निर्माण करने में आगमन विधि का प्रयोग करना चाहिए।

उनके पाठ्यक्रम विकास प्रतिमान के सात मुख्य चरण हैं। जिसके द्वारा पाठ्यक्रम विकास के मूल प्रतिमान का निर्माण होता है। यह चरण हैं—

1 छात्रों की आवश्यकताओं की पहचान करना।
2 छात्रों को पढ़ाये जाने वाले उद्देश्यों को शिक्षक द्वारा परिभाषित व स्पष्ट करेगा।
3 अध्ययन सामग्री को उद्देश्य अनुसार तैयार करना।
4 सामग्री को क्रमबद्ध लगाना तथा उसका प्रबन्ध करना।
5 उन शिक्षण विधियों व अधिगम अनुभवों का चयन करना, जिनसे छात्रों को व्यस्त रखा जा सके।

6. अधिगम का शिक्षण गतिविधियों को आयोजित करना।
7. उपरोक्त प्रक्रिया में शामिल छात्रों या शिक्षकों का मूल्यांकन करना।

हिल्डा टाबा के पाठ्यक्रम विकास प्रतिमान का मूल्यांकन :— इस प्रतिमान में शिक्षकों को स्वतंत्रता प्रदान की गई कि शैक्षिक संगठन की आवश्यकताओं को पहचान करने में शिक्षक सर्वाधिक उपयुक्त व्यक्ति होते हैं। वे अपने तर्क के अनुसार कदमों तथा उद्देश्यों का निर्माण कर सकते हैं। इस प्रतिमान में शिक्षक को विभिन्न अधिगम अनुभव चयनित करने चाहिए जो छात्रों की रुचि, आयु, लिंग तथा आवश्यकता के अनुसार होने चाहिए।

टाबा के अनुसार "कदमों का स्पष्ट होना- इस प्रकार होगा छात्रों को क्या समझना चाहिए, उन्हें क्या कैसे सीखना चाहिए तथा विचार करें की क्या बनना है।"